कलीसिया। परिशिष्ट 6

[अगुवाई]
अगुवाई के क्षेत्र में स्त्रियाँ

जब एक कलीसिया स्त्रियों को मण्डली में सेवा करने के लिए उनको चुनती है, तो ऐसी स्त्रियों को चुना जाना चाहिए जो बाइबल के अनुरूप योग्यताओं को पूरा करती हों और बाइबल के अनुसार कार्यों को पूरा करने में सक्षम हों।

मसीहियों और मसीही कलीसिया के बीच में किसी भी सेवकाई के क्षेत्र में स्त्रियों का पाया जाना एक बहुत ही विवादास्पद मामला है। इस परिशिष्ट का उद्देश्य विवाद पर कुछ प्रकाश डालना है। आपकी कलीसिया के अगुवों को इस मामले में अंतिम निर्णय लेना चाहिए।

नया नियम अगुवाई के क्षेत्र में स्त्रियों के पाए जाने के बारे में क्या सिखाता है?

1. बाइबल के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ में स्त्रियाँ।

कुछ मसीही कलीसियाएँ प्रेरित पौलुस के निर्देशों को केवल विवाहित स्त्रियों और उनके पतियों के बीच के सम्बन्धों तक ही सीमित कर देती हैं। अन्य मसीही कलीसियाओं ने कलीसिया की सभी अधिकारिक सभाओं में (विशेष रूप से परमेश्वर के दिन पर आराधना सभा में) स्त्रियों के कार्यक्षेत्रों में उसके निर्देशों का पालन किया।

(1) क्या प्राचीनों के सेवकाई क्षेत्र में स्त्रियाँ पाई जाती थीं?

पढ़ें 1 तीमुथियुस 3:2; तीतुस 1:6

बाइबल सिखाती है कि केवल पुरूषों को ही "प्राचीनों" (कलीसिया के अगुवों) के रूप में चुना गया था। उन्हें केवल "एक ही स्त्री का पुरुष" होना अनिवार्य था (1 तीमुथियुस 3:2; तीतुस 1:6)[1]। बाइबल कलीसिया में स्त्रियों की नियुक्ति को किसी भी सेवकाई के क्षेत्र में उचित नहीं ठहराती है।

(2) क्या सेवकों (डीकन्स) की सेवकाई के क्षेत्र में स्त्रियाँ पाई जाती थीं?

बाइबल यह भी सिखाती है कि सभी सेवक पुरुष थे। 1 तीमुथियुस 3:11 कहता है, "इसी प्रकार से स्त्रियाँ"।[2]

- यह पद "सेविकाओं" की अधिकारिक सेवकाई का उल्लेख नहीं करता, क्योंकि तब इस वाक्य को इस प्रकार होना चाहिए था "इसी प्रकार से सेविकाएँ"।[3]
- यह पद "सेवकों की पत्नियों" का भी उल्लेख नहीं करता, क्योंकि तब इस वाक्य को इस प्रकार से होना चाहिए था "उनकी पत्नियाँ"[4] या "पत्नियाँ होना"।[5] यदि "सेवकों की पत्नियाँ" एक अधिकारिक सेवकाई में थीं, तो इसका मतलब यह होगा कि "प्राचीनों की पत्नियों" को इससे बाहर रखा गया था। प्राचीनों और सेवकों की पत्नियों का उल्लेख पद 2 और 12 में किया गया है।
- यह अनुवाद "इस प्रकार से स्त्रियों को भी" विशेष स्त्रियों, "महिला सहायकों" या "महिला कार्यकर्ताओं" को संदर्भित करता है, क्योंकि "इस प्रकार" शब्द लोगों की एक ऐसी श्रेणी को दर्शाता है जो पुरूषों के समूह के समान होते हैं, बिना सेवक (डीकन) के।

इसलिए हमें इन स्त्रियों को इफिसुस की कलीसिया में स्त्रियों के एक विशेष समूह के रूप में मानना चाहिए जिन्होंने मण्डली में एक विशेष सेवा का कार्य किया था (तुलना करें 1 तीमुथियुस 5:3-16)।

(3) क्या फीबे एक सेविका थी?

रोमियों 16:1-2 बाइबल में पाया जाने वाला एकमात्र ऐसा समय है जिसमें एक स्त्री को "सेविका" कहा गया, वही शब्द जिसे एक पुरूष सेवक के लिए प्रयोग किया जाता है। यूनानी क्रिया "diakoneó" का उपयोग कभी भी सेवक के

---

[1] "एक पुरूष की पत्नी" नहीं। इसका अर्थ यह नहीं है कि प्राचीन को विवाहित होना चाहिए। इसका मतलब है कि स्त्रियों के प्रति विवाहित या अविवाहित प्राचीनों का व्यवहार पवित्र होना चाहिए। मसीहियों और मसीही अगुवों को छेड़छाड़ करने वाला नहीं होना चाहिए!

[2] Greek: gunaikas hósautós
[3] Greek: tas de diakonous
[4] Greek: gunaikas auton
[5] Greek: gunaikas echontes

सेवकाई क्षेत्र में सेवा करने के अर्थ में नहीं किया जाता है। हमेशा से ही इस सेवकाई का अर्थ "लोगों की आवश्यकताओं का ख्याल रखने" से है। इसलिए यूनानी संज्ञा "diakonos" का प्राथमिक अर्थ "सेवा करने वाले" से है "सेवक" (डीकन) से नहीं है। रोमियों 16:1 और प्रेरितों के काम 6:1-7 फीबे को "सेविका" (डीकन) के रूप में सन्दर्भित नहीं करता, परन्तु फीबे को एक "सेवा करने वाली" स्त्री के रूप में सन्दर्भित करता है!

किंखिया कुरिन्थ के शरणस्थान में से एक था। वहाँ एक मसीही कलीसिया थी और उस कलीसिया के भीतर फीबे एक सेविका थी। हालाँकि, उसकी सेवा और प्रेरितों के काम 6 अध्याय में सेवकों की सेवा में समानताएँ थीं, क्योंकि वह पौलुस समेत कई लोगों की "संरक्षक", "सहायक" या "मददगार"[6] थी। उसने शायद पूर्व और पश्चिम के बीच यात्रा करने वाले कई लोगों के लिए अतिथि सेवा की होगी। वह शायद फिलिप्पी (प्रेरितों के काम 16:15) की लुदिया जैसी स्त्री थी या ऐसी स्त्री जिसने यीशु और उसके शिष्यों की अपनी संपत्ति द्वारा सेवा की (लूका 8:1-3) या इफिसुस की स्त्रियों की तरह जिन्होंने कलीसिया में विशेष सेवाएँ की थीं (1 तीमुथियुस 5:9-10)। फिर भी, इस प्रकार की सेवाओं का अर्थ यह नहीं है कि इन स्त्रियों को कलीसिया में सेवकों के सेवकाई क्षेत्र में नियुक्त किया गया था।

2. बाइबल की शिक्षा के संदर्भ में स्त्रियाँ।

दो बाइबल गद्यांश, 1 तीमुथियुस 2:11-14 और 1 कुरिन्थियों 14:33-38 अधिकारिक निर्देश हैं न कि केवल ऐतिहासिक विवरण। तीतुस 2:3-5 दर्शाता है कि प्रेरित पौलुस ने स्त्रियों को अपने घरों में अन्य स्त्रियों को *सिखाने और प्रशिक्षित* करने का अधिकार दिया। और 1 कुरिन्थियों 11:3-5 से पता चलता है कि प्रेरित पौलुस ने कलीसिया की अधिकारिक सभाओं के अलावा स्त्रियों को *भविष्यद्वाणी* (परमेश्वर के वचन को प्रचार) करने का अधिकार दिया।

(1) 1 तीमुथियुस 2:11-14

हालाँकि, 1 तीमुथियुस 3:15-16 में प्रेरित पौलुस निर्देश देता है कि "किस प्रकार लोगों को परमेश्वर के घर में अपने व्यवहार को दर्शाना चाहिए (*present continuous tense*), जो कि जीवित परमेश्वर की कलीसिया (Greek: ekklésia) है"। यहाँ प्रेरित पौलुस कलीसिया की अधिकारिक सभाओं के विषय में बात कर रहा है, जिन्हें आमतौर पर "परमेश्वर के दिन"[7] पर आयोजित किया जाता था। वह उन पुरुषों को निर्देश देता है जो कलीसिया में एक प्राचीन की सेवकाई के क्षेत्र में नियुक्त होने योग्य हैं (1 तीमुथियुस 3:1-7) और (यदि आवश्यक हो) कलीसिया में सेवक के सेवा-क्षेत्र में नियुक्त किया जाना चाहिए (1 तीमुथियुस 3:8-13)। वह यह भी निर्देश देता है कि उन जगहों पर जहाँ मसीही जन प्रार्थना और शिक्षा के लिए एकत्रित होते हैं वहाँ पर किस प्रकार पुरुषों और स्त्रियों को स्वयं के आचरण को "हर जगह" दर्शाना चाहिए (1 तीमुथियुस 2:8-15)। प्रेरित पौलुस कहता है, "स्त्री[8] को चुपचाप पूरी आधीनता में सीखना चाहिए। और मैं कहता हूँ, कि स्त्री न उपदेश करे, और न पुरूष पर आज्ञा चलाए, परन्तु चुपचाप रहे।" (1 तीमुथियुस 2:11-12)।

"अ ग्रीक-इंग्लिश लेक्सिकन ऑफ द न्यू टेस्टामेंट एण्ड अदर अरली क्रिश्चियन लिटरेचर" By Bauer, Arndt, Gingrich के अनुसार बाइबल के इस गद्यांश में "मनुष्य" शब्द (Greek: anér) "प्रत्येक व्यस्क पुरुष को दर्शाता है" और सिर्फ "एक विवाहित व्यक्ति" को नहीं, बाइबल के गद्यांशों में "स्त्री" (Greek: gené) शब्द "प्रत्येक वयस्क महिला को दर्शाता है न कि केवल "विवाहित स्त्री" को! इस प्रकार, प्रेरित पौलुस इस निर्देश को विवाहित स्त्रियों तक सीमित नहीं करता। यह सभी स्त्रियों के लिए एक अधिकारिक निर्देश है।

(2) 1 कुरिन्थियों 14:26-38

1 कुरिन्थियों 14:26-38 में भी प्रेरित पौलुस ने कलीसिया की अधिकारिक आराधना सेवाओं के भीतर व्यवस्थित आचरण के सम्बन्ध में निर्देश दिए हैं जहाँ मसीही जन इकट्ठे हुए। कई पुरुषों और या भविष्यद्वाणी के वरदान के साथ पुरुषों ने "एक भजन, निर्देश का एक शब्द, एक प्रकाशन, एक अन्य भाषा या एक अर्थ बताया"। अधिकार के साथ प्रेरित पौलुस ने कलीसिया की अधिकारिक सभाओं की सीमाओं को निर्धारित किया ताकि इससे "कलीसिया की उन्नति हो सके" (1 कुरिन्थियों 14:26)।

[6] Greek: prostatis
[7]प्रकाशितवाक्य 1:10; प्रेरितों 20: 7
[8] Greek: guné
[9] Greek: anér
[10] Greek: guné in the plural
[11] Greek: hos en pasais ekklésiais tón hagión

वह तीन सीमाएँ निर्धारित करता है : वह सीमाएँ हैं :

- अन्य भाषा में बोलना (अन्य भाषाएँ)
- भविष्यद्वाणियाँ करना (प्रचार करना)
- इन अधिकारिक सभाओं में स्त्रियों का बोलना।

वह लिखता है, "स्त्रियाँ[10] कलीसिया में चुपचाप रहें।[11] उन्हें बोलने की इजाजत नहीं है (इस संदर्भ में प्रेरित विशेष रूप से अन्य भाषाओं और भविष्यद्वाणियों को बोलने के विषय में कह रहा है), परन्तु हमेशा अधीनता में रहना चाहिए (Greek: hupotassó) (imperative, present continuous tense), जैसा कि व्यवस्था कहती है" (1 कुरिन्थियों 14:34) ("जैसा कि व्यवस्था कहती है" तुलना करें पद 21 और उत्पत्ति 3:16)।

कुरिन्थ की स्त्रियाँ विनम्र तरीके से व्यवहार नहीं करतीं और पुरुषों के रूप में कार्य करना चाहती थीं। वे सभाओं में अधिकार के साथ परमेश्वर के वचन बोलना चाहती थीं, जैसे कि पुरुष अधिकार के साथ परमेश्वर के वचन बोलते हैं, अन्य भाषाएँ बोलते और भविष्यद्वाणी करते हैं। परमेश्वर इस बात की अनुमति नहीं देता!

वह कहता है कि उसका यह निर्देश "परमेश्वर की आज्ञा है। अगर कोई इसको (आज्ञा को) अनदेखा करता है, तो स्वयं उसे भी अनदेखा कर दिया जाएगा" (1 कुरिन्थियों 14:37-38)! और वह लिखता है, " जैसा पवित्र लोगों (मसीही जन) की सब कलीसियाओं में है" (1 कुरिन्थियों 14:33) इसलिए यह आज्ञा पौलुस के समय की संस्कृति तक ही सीमित नहीं है, बल्कि संसार की सभी संस्कृतियों के लिए, हमेशा के लिए मापदण्ड है! यह आज्ञा घर पर विवाहित स्त्रियों और उनके पतियों के बीच सम्बन्धों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि कलीसिया की सभी अधिकारिक सभाओं में स्त्रियों और पुरुषों के सम्बन्धों को संदर्भित करती है।

(3) 1 पतरस 3:1-5

इस प्रकार स्त्रियों को कलीसिया के भीतर आत्म-नियंत्रण का अभ्यास करना चाहिए। " हे पत्नियों, तुम भी अपने पति के आधीन रहो। इसलिये कि यदि इनमें से कोई ऐसे हो जो वचन को न मानते हों, तौभी तुम्हारे भय सहित पवित्र चालचलन को देखकर बिना वचन के अपनी-अपनी पत्नी के चालचलन के द्वारा खिंच जाएँ। और तुम्हारा सिंगार, दिखावटी न हो, अर्थात् बाल गूंथने, और सोने के गहने, या भाँति-भाँति के कपड़े पहिनना। वरन् तुम्हारा छिपा हुआ और गुप्त मनुष्यत्व, नम्रता और मन की दीनता की अविनाशी सजावट से सुसज्जित रहे, क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में इसका मूल्य बड़ा है। और पूर्वकाल में पवित्र स्त्रियाँ भी, जो परमेश्वर पर आशा रखती थीं, अपने आपको इसी रीति से सँवारती और अपने-अपने पति के आधीन रहती थीं।" यह आज्ञा सबसे पहले घर पर एक विवाहित महिला और उसके पति के बीच सम्बन्धों को संदर्भित करती है, लेकिन यह कलीसिया की अधिकारिक सभाओं में भी स्त्रियों और पुरुषों के बीच सम्बन्धों को भी संदर्भित करती है।

3. बाइबल में महिलाओं के समान महत्व हैं, लेकिन पुरूषों के समान नहीं हैं (वे अलग हैं)।

पढ़ें लूका 8:1-3; रोमियों 16:1-6; 1 तीमुथियुस 3:11; 5:1-16; तीतुस 2:3-5

(1) परमेश्वर की दृष्टि में स्त्रियों और पुरूषों का महत्व, मूल्य, सक्षमता और आवश्यकता एक समान हैं!

दोनों समान रूप से मसीह की देह का हिस्सा हैं (गलातियों 3:28)। दोनों पुरुषों और स्त्रियों को कलीसिया के भीतर अपने आत्मिक वरदानों के साथ समान रूप से सेवा करने की आवश्यकता है (1 पतरस 4:10)।

(2) लेकिन स्त्रियों और पुरुषों के दिए गए कार्यों में भिन्नता है।

फिर भी, परमेश्वर द्वारा जो कार्य पुरुषों और स्त्रियों को ईश्वरीय तरीके से सौंपे गए हैं वह समान नहीं है! परमेश्वर ने

स्त्रियों को विभिन्न कार्य को सौंपा है:

- *शारीरिक* रूप से बच्चे को जन्म देना (उत्पत्ति 3:16; 1 तीमुथियुस 2:15)
- *सामाजिक* रूप से विवाह के सम्बन्ध में बंधना (इफिसियों 5:22-24; कुलुस्सियों 3:18; 1 पतरस 3:1-6)
- *आत्मिक* रूप से मण्डली में होना (1 तीमुथियुस 2:11-14; 1 कुरिन्थियों 14:26-38)

- [12]"एक पत्नी का पति" न की : "एक पति की पत्नी"।
- [13]आगामी लोकतंत्र में महिलाएँ जीवन के हर क्षेत्र में समान अधिकारों के लिए लड़ती हैं।

परमेश्वर ने विवाह में और कलीसिया में अगुवाई का कार्य पुरुषों को सौंपा है न कि स्त्रियों को (1 तीमुथियुस 3:2ब)।[12] परमेश्वर ने पुरूषों को कलीसिया की अधिकारिक सभाओं में बाइबल को प्रचार और सिखाने का कार्य सौंपा है, न कि स्त्रियों को (प्रेरितों के काम 6:4; 1 थिस्सलुनिकियों 5:12ब; 1 तीमुथियुस 3:2ब; 5:17; 2 तीमुथियुस 4:1-5; तीतुस 1:9)।

(3) कलीसिया में स्त्रियाँ अनिवार्य हैं।

बाइबल में कई ऐसी स्त्रियों के नाम और कार्य दर्ज हैं, जिन्होंने कलीसिया में महत्वपूर्ण और मूल्यवान सेवाएँ की हैं (लूका 7:44-47; 8:2-3; यूहन्ना 4:39; 20:17-18; प्रेरितों के काम 9:36; 16:15; रोमियों 16:1-2; 16:3; 16:6; 16:12-13; 1 तीमुथियुस 5:1-16; तीतुस 2:3-5)।

(4) दो ऐसी परिस्थितियाँ जिनसे बचा जाना चाहिए।

- पहली स्थिति यह है कि जब मसीही कलीसिया स्त्रियों को मण्डली के भीतर सेवकाई में नियुक्त करती हैं, परन्तु उनके पास ऐसा करने के लिए बाइबल द्वारा दिया गया कोई अधिकार नहीं होता है।
- दूसरी स्थिति यह है कि जब मसीही कलीसिया अपनी महिला सदस्यों की महत्वपूर्ण और मूल्यवान सेवाओं को नज़रअंदाज़ कर देते हैं।

4. परमेश्वर यह निर्धारित करता है कि किसके पास अधिकार हैं और किस सम्बन्ध में।

(1) रोमियों 13:1-2

अधिकार के बारे में पूछे गए सवाल का जवाब किसी भी मानव संस्कृति (पारंपरिक मूल्यों या रीति-रिवाज़ों) द्वारा नहीं दिया जाता है। इसका पता लोकतांत्रिक मतदान द्वारा भी नहीं लगाया जा सकता। कलीसिया एक लोकतंत्र नहीं है, बल्कि एक धर्मतंत्र (Christocracy) है![13] "हर एक व्यक्ति प्रधान (संचालक) अधिकारियों (Greek; exousia) के आधीन रहे; क्योंकि कोई अधिकार

ऐसा नहीं, जो परमेश्वर की ओर से न हो; और जो अधिकार हैं, वे परमेश्वर के ठहराए हुए हैं। इससे जो कोई अधिकार का विरोध करता है, वह परमेश्वर की विधि (Greek: diatagé) का सामना करता है, और सामना करनेवाले दण्ड पाएँगे।" (रोमियों 13:1-2 तुलना करें मत्ती 28:18)।

(2) परमेश्वर ने बाइबल में सात अधिकार-आधीनता के सम्बन्ध स्थापित किए :

- I. परमेश्वर के पास मसीह में सब चीज़ों पर अधिकार है (भजन 145:13; भजन 146:10; मत्ती 28:18; 1 कुरिन्थियों 11:3; इफिसियों 1:20-23; कुलुस्सियों 1:18)।
- II. पुरुषों और स्त्रियों के पास परमेश्वर की सृष्टि पर अधिकार है (उत्पत्ति 1:28; भजन 8:4-8)।
- III. विवाह में और कलीसिया की अधिकारिक सभाओं में स्त्रियों पर पुरुषों का अधिकार है (उत्पत्ति 3:16; इफिसियों 5:22-24; कुलुस्सियों 3:18; 1 पतरस 3:1-6) (प्रेरितों 20:17,28 ; 1 कुरिन्थियों 11:3; 1 कुरिन्थियों 14:33-35; 1 तीमुथियुस 2:11-14; 1 तीमुथियुस 3:2; तीतुस 1:5-6)।
- IV. माता-पिता के पास उनके बच्चों पर अधिकार है जो अभी भी उम्र में छोटे हैं (इफिसियों 6:1-3; कुलुस्सियों 3:20)।
- V. किसी देश की सरकार का अपने नागरिकों पर अधिकार है (रोमियों 13:3-7; 1 पतरस 2:13-17; तुलना करें प्रकाशितवाक्य 13:1-10).
- VI. मालिक के पास अपने कर्मचारियों पर अधिकार है (इफिसियों 6:5-9; कुलुस्सियों 3:22-4: 1; 1 पतरस 2:18-23)।
- VII. प्राचीनों के पास मण्डली के सदस्यों पर अधिकार होता है (प्रेरितों 20:28; 1 थिस्सलुनिकियों 5:12; इब्रानियों

13:17)।

5. लोगों की पारंपरिक संस्कृति और परमेश्वर के राज्य की संस्कृति।

कुछ मसीही प्रेरित पौलुस के निर्देशों को पवित्र आत्मा[14] के माध्यम से अधिकारिक नहीं मानते हैं, लेकिन पौलुस के समय में मानव संस्कृति द्वारा निर्धारित सामान्य निर्देशों के रूप में मानते हैं जो अब वैध नहीं हैं। यह सोचने का एक ख़तरनाक और गलत तरीका है!

---

[14]मत्ती 22:43; यूहन्ना 14:26; यूहन्ना 16:13-15; 1 कुरिन्थियों 4:6; 2 तीमुथियुस 3:16-17; 2 पतरस 1:20-21

(1) संस्कृति की परिभाषा।

लोगों के किसी भी समूह की संस्कृति उनके सांसारिक-दृष्टिकोण, सत्य, विश्वास, अंधविश्वास और मूल्य हैं जो उनके दृढ़ विश्वास, अनुभव, व्यवहार, रिश्तों और संस्थानों (रीति-रिवाज़ों और परंपराओं) में व्यक्त की जाती है।

(2) बाइबल का ऐतिहासिक संदर्भ।

लोगों के हर समूह की ऐतिहासिक और पारंपरिक संस्कृति में अच्छे और बुरे पहलू पाए जाते हैं। बाइबल के ऐतिहासिक भागों में उन अच्छे और बुरे पहलुओं का वर्णन किया गया हैं जो मानव संस्कृति में उस समय पाए गए थे जिस समय बाइबल की एक विशेष पुस्तक को लिखा गया था। परन्तु किसी भी युग में मानव संस्कृति के यह विवरण मानदण्ड-सम्बन्धी नहीं है!

(3) बाइबल का सांस्कृतिक संदर्भ।

परमेश्वर चाहता है कि परमेश्वर के राज्य की संस्कृति संसार में प्रत्येक देश, नगर और भाषा की एकमात्र संस्कृति बन जाए! एक तरफ, बाइबल के शिक्षाप्रद भाग सिखाते हैं और आज्ञा देते हैं कि परमेश्वर के राज्य की संस्कृति के पहलुओं को संसार के सभी स्थानों और इतिहास में सभी युग में संस्कृति बननी चाहिए (तुलना करें मत्ती 5 से 7 और परमेश्वर के राज्य के विषय में सारे दृष्टान्त)! और दूसरी तरफ, बाइबल के शिक्षाप्रद भागों में संसार के सभी स्थानों और संसार के इतिहास में सभी युग में प्रत्येक मानव संस्कृति के बुरे पहलुओं को वर्जित कर दिया गया है। परमेश्वर के लोगों को अधर्मी राष्ट्रों के घृणास्पद तरीकों का अनुसरण नहीं करना चाहिए (तुलना करें व्यवस्थाविवरण 18:9-13)!

बाइबल के शिक्षाप्रद भागों में मसीही विवाह सम्बन्ध, माता पिता और बच्चों के बीच सम्बन्ध, मालिकों और कर्मचारियों के बीच सम्बन्ध, सरकार और नागरिकों के बीच सम्बन्ध आदि शामिल हैं (इफिसियों 5:22-6: 9; कुलुस्सियों 3:18 - 4:1; 1 पतरस 2:13 - 3:7)। बाइबल स्पष्ट यौन नैतिक मानकों (लैव्यव्यवस्था 18:5-6,20,22,23-24) और न्याय के मानकों (लैव्यव्यवस्था 19:9-18,26-37) (तुलना करें मत्ती 5:21-48) के विषय में आज्ञा देती है। इसी प्रकार, यह कलीसिया में पुरुषों और स्त्रियों के बीच सम्बन्धों के विषय में आज्ञा देती है (1 कुरिन्थियों 11:3; 1 कुरिन्थियों 14:33-35; 1 तीमुथियुस 2:11-14)। यह सभी शिक्षाएँ, आज्ञाएँ और निषेध संसार में प्रत्येक स्थान और समय मानक सम्बन्धी हैं!

(4) बाइबल की व्याख्या का सही सिद्धान्त।

लोगों की संस्कृति बाइबल की व्याख्या को निर्धारित नहीं कर सकती है! इसके बजाय, बाइबल में परमेश्वर के राज्य की संस्कृति को यह निर्धारित करना होगा कि संसार में प्रत्येक स्थान और समय की मानव संस्कृति को कैसा होना चाहिए!

परमेश्वर ने संसार में लोगों के प्रत्येक समूह के साथ निम्नलिखित बातों को परिवर्तित (बदलने) करने का निर्णय लिया है :

- न केवल उनके हृदय (स्थिति, स्वभाव, उद्देश्य, दृढ़-विश्वास, विश्वास)
- लेकिन उनके जीवन (शब्द, कर्म, व्यवहार)
- और उनकी राष्ट्रीय संस्कृति (मानदण्ड, मूल्य, संस्थान)

मसीहियों को बाइबल के ऐतिहासिक भागों और बाइबल के शिक्षाप्रद भागों के बीच अन्तर करना चाहिए। बाइबल के ऐतिहासिक भाग वर्णन करते हैं कि वास्तव में लोगों के जीवन और संस्कृतियों में क्या हुआ, चाहे वह अच्छा या बुरा हो। ये विवरण मसीही व्यवहार के लिए मानक-सम्बन्धी नहीं हैं। लेकिन बाइबल के शिक्षाप्रद भाग सिखाते और आज्ञा देते हैं कि वास्तव में लोगों के जीवन और संस्कृति में क्या होना चाहिए। ये शिक्षाएँ और आज्ञाएँ प्रत्येक स्थान पर और हमेशा

के लिए मसीही व्यवहार के लिए मानक-सम्बन्धी हैं! गैर-मसीहियों के व्यवहार के लिए भी यह मानक-सम्बन्धी हैं, भले ही गैर-मसीही उन्हें स्वीकार न करें।

6. महिला सेविकाओं की योग्यताएँ।

जब एक कलीसिया महिला सेविकाओं का चयन करती है, तो इन स्त्रियों को बाइबल की आवश्यकताओं को पूरा करना होगा। उन्हें महिला सेविकाओं के लिए बाइबल सम्बन्धी कार्यों को पूरा करने में भी सक्षम होना चाहिए।

1 तीमुथियुस 3:11 सिखाता है कि इन महिला सेविकाओं को सम्मान के योग्य होना चाहिए। वे द्वेषपूर्ण बातें नहीं कर सकतीं। उन्हें आत्म संयमी होना चाहिए, यानी उन्हें अपने व्यवहार के सम्बन्ध में विनम्र होना चाहिए। उन्हें प्रत्येक बात में विश्वासयोग्य होना चाहिए। इस प्रकार, पुरुष सेवकों के रूप में, महिला सेविकाओं (प्रबन्धक, सहायक) को उनके चरित्र, व्यवहार और क्षमताओं के आधार पर चुना जाना चाहिए।

7. महिला सेविकाओं के कार्य।

(1) वह स्त्रियाँ जिन्होंने यीशु को सहयोग दिया।

स्त्रियों ने अपनी सेवा के दौरान यीशु और उसके शिष्यों को सहयोग दिया (लूका 8:1-3)।

(2) फीबे, कुरिन्थ में पौलुस की संरक्षक, सहायिका और प्रबन्धक।

फीबे प्रेरित पौलुस की सहायिका या प्रबन्धक थी (रोमियों 16:1-2)।

(3) प्रिस्का, पौलुस की सहकर्मी।

प्रिस्का प्रेरित पौलुस की सहकर्मी थी (रोमियों 16:3-4)।

(4) वे स्त्रियाँ जो सेवकों की सहायिका और प्रबन्धक थीं।

इसलिए महिला सेविकाओं को सेवकों की सहायिका या प्रबन्धक होना चाहिए, ख़ासतौर पर गरीबों और जरूरतमंदों के प्रति अपने कार्य में। वे ऐसे कार्य करती हैं जिनके लिए स्त्रियाँ पुरुषों से बेहतर सुसज्जित होती हैं (1 तीमुथियुस 3:11)।

(5) वृद्ध स्त्रियाँ युवा स्त्रियों को तैयार करती हैं।

कलीसिया में वृद्ध स्त्रियों ने युवा स्त्रियों के सम्मुख एक उदाहरण स्थापित किया कि कैसे अपने पतियों और बच्चों से प्रेम करना, आत्म-नियंत्रित और पवित्र रहना, घर पर व्यस्त रहना, दयालु होना और अपने पतियों के आधीन होना चाहिए (तीतुस 2:3-5)।

(6) इफिसुस में वृद्ध विधवाएँ।

इफिसुस की कलीसिया में वृद्ध विधवाओं के एक समूह के पास विशेष कार्य थे (1 तीमुथियुस 5: 9-16)।

(7) प्रारंभिक कलीसिया के इतिहास में स्त्रियाँ।

प्रारंभिक कलीसिया का इतिहास यह बताता है कि इन स्त्रियों के पास निम्नलिखित कार्य थे : उन्होंने युवा स्त्रियों को सलाह और निर्देश दिए, अन्य स्त्रियों के साथ प्रार्थना की, बीमारों से मिलीं, बपतिस्मे के लिए स्त्रियों को तैयार किया और प्रभु-भोज में स्त्रियों को शामिल किया। उन्होंने विधवाओं और अनाथों की भी देखभाल की जिन्हें कलीसिया सहयोग देती थी। स्त्रियों ने इन कार्यों के लिए स्वयं को दे दिया क्योंकि वे इन कार्यों को करने के लिए पुरुषों की तुलना में बेहतर विकल्प (सुसज्जित) थीं!